।। अथ श्री कुंडलीनी मंत्र ।।

ॐ नमो आदेश गुरु को, स्वामी तुम्हारी हो दुहाई
रहे प्रज्ञापुर देश, सुलाकर ग्यान का भंडार ।
माया है बंद पिंजडे में, छत, घुम के झाडे तीन फेरे
सोके हुए लट, आदेश स्वामीजी का, तेरी कृपा से हुए फडफड ।
पहली चौकी गणेशजी की, नाम है मुलाधार
कमल है चार दलों का, रहे पाताल मुख ।
वं शं षं सं रहे चौकीदार पृथ्वी का भार लेके
'लं' बीज हुए साकार, पाछु आए डाकीनी ।
आगे चले इंद्र ऐरावत, रहे पीत, करे भेदन, होए ब्रम्ह ।।
दुजी चौकी हरी की रहे रक्तवर्ण, कमल है षट्दल रहे स्वर्ग मुख
बं भं मं यं रं लं, रहे चौकीदार लेके वरुण का भार ।
हुए वं बीज साकार, पाछो आवे शाकीनी
आगे भागे नक्र करके भेदन होवे विष्णु, होवे माया पार ।
तीसरी चौकी चक्राकार, नाम रहे मणिपुर
कमल है दिशादल, रहे नर मुख ।
डं ढं णं तं थं दं धं नं फं पं रहे चौकीदार
होके अंबर लेके स्वर्ग का द्वार, लेके तेज का भार ।
होके रं बीज साकार, पाछो आए लाकिनी
आगे जाए वृषभ, पार्श्व में बैठे रुद्र, लेके भस्म रहे चण्डाकार ।
विश्व करे संजीवन, करके भंजन रहे रुद्र ।।
चौथी चौकी संध्या में रहे मग्न, चले निरंतर
नाम होके अनाहत, कमल रहे राशी दल ।
धुंधुंर वर्ण, कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं
चौकीदार लेके स्वर्ण बाणलिंग, नाम करे पूर्णगिरी पीठ ।
उसपे बैठे ईश, पाछो आए काकीनी
आगे चले निशा मृग आरुढ होके पवन यं बीज हुए साकार ।
भेदन करके पा के शक्ती रहे हनुमान
रुधिर कमल स्वर्ग पाताल संध्या में सदा निमग्न ।।
पांचवी चौकी अरुणोदय वर्ण, विशुध्द नाम
स्फटीक वर्ण से शोभन करे कला कमल ।

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं ऐं ऐं ओं औं अं अः रहे चौकीदार
आने जाने में सदा होके मग्न पाछो आए शाकीनी ।
आगे चले श्वेत गज, विराज हुए सदाशिव
नाम करे जालिंदर पीठ, शक्ति है दुर्गा लेके बीज हं कार ।
देके माई को पुकार होके गुरु का साक्षात्कार
रक्त वर्ण का होकर स्वर्ग पिपासा में संचार ।।
छठी चौकी विश्व द्वार, गुरु की शक्ती, लेकर हुए आज्ञाधार
वर्ण है श्वेत बैठे रहे शिव, गोद में लिये लिंग चित्त रहे गुंग ।
रहे प्रकृति पुरुष कमल स्वर्ग मुख हं क्षं दो चौकीदार लेके साक्ष
सिद्धी पाने देने में सदा रहे दक्ष ।
पाछु आए हाकीनी, आगे चले वृषभ हुए ब्रम्हाण्ड का साक्षात्कार
लेके शरण, पठा धोके शिवजी के, माया चले अमृत द्वार ।
सुंदर है इसका रुप हंस पे हुए सवार, लेके उड्डान पहुंचे सहस्त्रार
होके निला आकाश परब्रम्ह से सदा लिप्त पाके छुटकार षट चौकी पे ।।
सातवां रहे सद्गुरु परमेश्वर, कमल रहे सहस्त्रदल होके स्वर्ग मुख
श्वेत वर्ण युक्त दल हं ळं क्षं चौकीदार ।
त्रिकोण कर्णिका में विद्युत समान रहे परम शिव
पार्श्व में सहस्त्रसुर्य से ज्योति रहे दक्ष
परम शिव के उपर सदा रहे उसका लक्ष ।
ऐसी माया का खेल है बडा भावुक
तैराती करो स्वामीजी लेके ज्ञान चाबुक ।
होके साक्षात्कार अनंत कोटी ब्रम्हांड नायक स्वामीजी तुम्हारा है रुप
साथ चलाके दिखाओ मुझे पैलतीर,लेके डोली, डोली में स्वामी
स्वामीजी के चरणो में मैं रहु स्वस्थ ।
डोली को लेकर नवनाथ चले दत्तधाम
ऐसी अगाध माया नवनाथ की लेके कंधों पे अपनी डोली रक्षण करके मेरा
हुए सिद्धी, समस्त, जो जो इच्छा करु तो तो पुरी करें
ऐसे नवनाथ सदा मेरी रक्षा करे ।
अनंत कोटी ब्रम्हांड में हैं एक ब्रम्हांड
उस ब्रम्हांड में सुर्य है लिक, सात संवत्सर है दादाजी ।
सत्तावीस नक्षत्र है फुल, बारा राशी है फुल दंड

नौ ग्रह भंवर चुसे मधु सदा फुल का, उसमें धरती है एक ।
धरती पे है सप्तद्विप, सप्तद्विप मे जम्बुद्विप, उसमे है भारतवर्ष
भारतवर्ष में हिमाचल आदी की गोद उसमे संहयाचल ।
गोद में पुण्यनगरी, पुण्यनगरी में है आळंदी संजीवन ग्राम
संजीवन ग्राम में है माउली का स्थान ।
माउली के आधार में है चिंचवड ग्राम संजीवन मोरया जी का स्थान
उसमें संतकि गणेश जी करते वास ।
करे याचना सतगुरु को पार करके माया जाल
दिखाओ पैलतीर आदेश गुरु जी को ।
स्वामीजी तुम्हारी हो दुहाई कृपा दृष्टी से करो हमारी भलाई
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा ।।

मनुष्य जाती मध्ये जेव्हा जन्म होतो तेव्हा भगवंत ब्रम्हरंध्रातुन शक्ति शरीरात प्रवेश करतो. ती शक्ति मुलाधार चक्रापाशी साडेतीन वेटोळे घालुन स्वस्थ झोपलेली असते. ही जर जागृत करुन सहस्त्रार चक्रामध्ये आणली तर पींड व ब्रम्हांड ऐक्य घडते.योगी, सत्पुरुष यांनी या कुंडलीनी शक्तिचे वर्णन अनेक ग्रंथांमध्ये केलेले आहे.
९ जून २०११ साली श्री अक्कलकोट क्षेत्री ध्यानात बसलेले असताना श्री स्वामींनी हा मंत्र कानात फुंकला व त्याच वेळेस अमेरीकेतील डॉक्टर जयंत लोखंडे यांनी तो लिहून घेतला. हा मंत्र सतत पठण केल्याने व सद्गुरुंचे ध्यान केल्याने आध्यात्मिक प्रगती होऊन पींड व ब्रम्हांड एक होण्यास मदत होते व गुढ, अदृश्य ज्ञानाचे प्रगटीकरण होते. हाच मंत्र येथे भक्तांसाठी देत आहोत. मंत्र वाचताना त्यातील प्रत्येक शब्दाचा अर्थ समजुन घेणे व त्याची अनुभुती स्वशरीरावर करणे आवश्यक आहे. प्रयासाने किंवा ढोंगीपणाने प्रयत्न करु नये. गुरु ज्ञान येथेच पाझरते जेथे अज्ञानाला ज्ञान समजुन घेण्याची लालसा असते.